हज़रत शैख अबदुल खादिर जीलानी

जीवन व शिक्षण

हर निर्माण का लक्ष्य अल्लाह तआ़ला कि इ़बादत तथा इस कि बन्दगी है। बंदगान खुदा! अपने रब के हुज़ूर अपनी विनम्रता व प्रार्थना का प्रदर्शन करते हुए इ़बादत करते हैं।

इसे सन्तुष्ठ करने कि कोशिश करते हैं, हमेशां इस कि सन्तुष्ठा प्राप्त करने कि चिन्ता करते हैं तथा पालन हार इन्हां लोक परलोक में इस का प्रतिफल दान फरमाता है। इन्हें अपने दरबार में उच्च स्तर प्रदान फरमाता है। अपना विशेष खुर्ब (नज़दीकी) प्रदान करता है।

तथा इन्हें अल्लाह तआ़ला के दरबार में स्वीकृत कर विलायत कि ओर आभूषण फरमाता है तथा यह ऐसा विशाल स्तर है, जो अल्लाह तआ़ला ऑलिया किराम को इन कि उपासना तथा प्रयास के पुरस्कार दान फरमाता है तथा कुछ सौभाग्य वह होते हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला उपासना एवं प्रयास के बिना ही अपने दरबार में स्वीकृत बना लेता है तथा विलायत का स्तर पर संबोधित फरमाए। जैसा के अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है अपनी ओर चुन लेता है तथा अपनी ओर का मार्ग उसी को दिखाता है जो उसकी ओर रुजू करता है।

(सुरह अश शूराः 42:13)

अल्लाह तआ़ला जिन ऑलिया के दरबार को बिना भक्ति व धर्मनिष्ठता व दृढ़ता, मेहनत व परिश्रम के स्वंय अपनी अता व करम से चुल लेता है तथा अपना प्रिय बना लेता है तथा इन्हें अपनी कृपा व दया से इनाम से संबोधित करता है।

इन्हें विशेष अल्लाह तआ़ला अपने आदरणीय, प्रिय व प्रवरणशील में बेमिसाल वाली हस्ती महबूब सुभानी, खुत्ब रब्बानी ग़ौसे समदानी खिंदील नूरानी अबु मुहम्मद मोही उद्दीन सैयदना अबदुल खादर जीलानी गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने दरबार में विशिष्ठ स्थान प्रदान किया है।

तथा आप को सम्पूर्ण ऑलिया किराम का सरदार व मुखिया तथा इन का पेशवा व मुखतदी बनाया है। इस अल्लाह के दानशीलता तथा सुचरित खुदा के लक्षण आप के जन्म से पूर्व ही प्रकट हो रहे थे।

जैसे जब ठण्डी हवाएं चलती हैं तो अल्लाह कि रहमत के प्रकट कि खुशी के समाचार देती हुई गुज़र जाती हैं। इसी प्रकार आप के जन्म से पूर्व खुशी के समाचार दिए गएं तथा आप का जन्म तथा प्रेयसि से संबंधित कुशल सूचना सुनाई गई।

पावन जन्म कि खुशख़बरी

तबखता कुबरा, बहजतुल असरार, खलाइद उल जवाहिर, नफहातुल उन्स, जामेअ़ करामातुल ऑलिया, नुज़हतुल खातिर अल फातिर तथा अक़बारुल

अक़्यार आदि पुस्तकों में हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जन्म के प्रसंग इस प्रकाह वर्णन हैः-

महबूबे सुभानी हज़रत शेक़ अबदुल खादर जीलानी के पिता हज़रत अबु सालह सैयद मूसा जंगी दोस्त रहमतुल्लाहि अलैह ने आप के जन्म कि रात देखा के हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम, सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम कि मुबारक जमात के साथ आप के घर आगमन हुए तथा आप केसाथ ऑलिया किराम भी उपस्थित हैं। हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इन्हें यह खुशी कि समाचार प्रदान फरमाईः-

भाषांतरः ऐ अबु सालेह! अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें ऐसा नेक नंदन आभूषण किया है जो मेरा प्रिय है, वह मेरा और अल्लाह तआ़ला का महबूब है तथा शीघ्र इन कि ऑलिया अल्लाह तथा परमानंद में वह शान व प्रतिभा प्रकट होगी जो पैगम्बरों में मेरी (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) शान है।

हज़रत अबु सालेह मूसा जंगी दोस्त रहमतुल्लाहि अलैह सपने में सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त पूर्ण पैगम्बरों अलैहि सलाम के दर्शन से संबोधित हुए तथा सभी ने आप को यह बशारत दी के सम्पूर्ण ऑलिया किराम तुम्हारे नंदन का पालन करेंगे तथा इन सब कि गरदनों पर इन का खदम होगा।

जिस रात हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जन्म हुआ, इस रात जीलान शरीफ कि जिन महिलाओं के यहाँ जन्म हुआ, इन सब को अल्लाह तआ़ला ने लडका ही दान फरमाया तथा वह हर लडका, अल्लाह तआ़ला का वली बना।

आप को शुभ नामः अबदुल खादर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) है।

कुन्नीयतः अबु मुहम्मद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) है तथा धन्य उपाधि मोहिउद्दीन, महबूब सुभानी, ग़ौसुस सखलैन, पीराने पीर तथा ग़ौसे आज़म दसतगीर आदि हैं।

आप का जन्म 29 शअ़बान 470 हिज़्री, ईराक़ देश के एक नगर जीलान, नज़द बग़दाद शरीफ में हुआ। तथा आप का पावन देहान्त 9, 17 रब्बीयुल आखिर 561 हिज़्री में हुआ, अतः हिन्दुस्तान में ग्यारवी शरीफ से लोकप्रिय है।

(मासबता बिस सुन्नहः 68)

हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हसनी तथा हुसैनी सादात हैं। पिता से सिलसिला वंशज हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जा मिलता है तथा माता से हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जा मिलता है।

तथा आप का उच्च खानदान (परिवार) ऑलिया अल्लाह का मुबारक घराना है। आप के दादा जान, नाना जान, पिता, माता फूफीजान, भाई साहब तथा बेटे बाकमाल ऑलिया किराम में से हैं एवं साहब करामत, रफीअ़ स्थान तथा विशाल स्तर के हैं।

जन्म के साथ ही विलायत कि घोषणा

बचपन ही से आप पर विलायत के लक्षण उजागर थे अर्थात 29 शअ़बान को आप का जन्म हुआ तथा 1 रमज़ान मुबारक ही से आप ने रोज़ा रखा, सेहरी से ले कर इफतार तक आप अपनी प्रिय माता का दूध ना पीते।

जैसा के आप कि माता का वर्णन है के मेरे नंदन अबदुल खादर रमज़ान शरीफ में कभी दिन के समय में दूध ना पीते थे।

एक बार मौसम धुंदला था बादल घिरे होने के कारण से लोगों को रमज़ान का चाँद दिखाई ना दिया, लोगों ने जब पूछा तो आप ने कहा के मे लड़के ने आज दूध नहीं पिया है।

बाद में खोज करने पर यह सच्चाई स्पष्ट हो गई के उस दिन रमज़ान की प्रथन दिनांक ही थी, इस प्रकार सारे नगर में यह बात लोकप्रिय हो गईः

भाषांतरः हमारे नगर में इस समय लोकप्रिय हो गई के सादात घराने में एक नंदन ने जन्म लिया है जो रमज़ान शरीफ में पूर्ण दिन दूध नहीं पीते। बल्कि रोज़ा रखते हैं।

(तबखात उल कुबरा, जिल्द 1, पः 126, बहजतुल असरार, पः 89, खलाइ़द उल जवाहिर, पः 3, नफाहतुल उन्स, फारसी, पः 251, जामअ़ करामात ऑलिया, जिल्द 2 पः 201, नुज़हतुल खातिर अल फातिर, पः 23, अक़बारुल अक़यार, पः 23, सफीनतुल ऑलिया, पः 63)

अभी हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जन्म ही हुआ था के अल्लाह तअ़ाला ने आप कि उच्च जात लक्षण के फैज़ के नहरे बहा दिए।

स्वंय भी अल्लाह के दरबार में बन्दगी का उपहार पेश कर रहे हैं तथा जनता को भी अल्लाह के दरबार में पेश कर रहे हैं। इस के परिणाम इस बात कि घोषणा कर दी गई के आप कि जात को उम्मत (समुदाय) कि रहनुमाई के लिए अस्थित्व प्रदान किया गया है तथा सारे जगत के लिए आप को मान्य तथा आदरणीय बना दिया गया, आप के कमाल कि यह स्थिति है के आप के रोज़े को देख कर लोग रोज़ा रख रहे हैं।

आप कि इ़बादतों से पाठ प्राप्त कर के अपनी इ़बादतों को उचित बना रहे हैं। तो जिस समय आप मार्गदर्शन व हिदाय पर बैठकर निर्माण कि रहनुमाई फरमाते तो फैज़ रसानी की कया स्थिति होती होगी?

हज़रत ग़ौसे पाक कि विलायत

हज़रत सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से किसी ने पूछा, आप को कब से मालूम है के आप अल्लाह तआ़ला के वली हैं? तो आप ने अनुदेश कियाः

भाषांतरः मैं 10 वर्ष का लडका था के अपने नगर के मदरसे में पढने के लिए अपने घर से निकलता तो मैं अपने चारों ओर फरिश्तों को चलते देखा करता, तथा जब मदरसा पहुंचता तो मैं इन्हें यह कहते हुए सुनता के अल्लाह तआ़ला के वली के लिए रास्ता दीजिए! यहाँ तक के वह तशरीफ रखें।

(बहजतुल असरार, पः 21, खलाइ़द उल जवाहिर, पः 9, अक़बारुल अक़यार, पः 22, सफीनतुल ऑलियाः 63)

खलाइद उल जवाहिर में विवरण हैः-

भाषांतरः हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं के जब मैं 10 वर्ष के स्थिति में मदरसे को जाया करता था तो दैनिक एक फरिश्ता मनुष्य कि शक्ल में मेरे पास आता एवं मदरसा ले जाता, तथा लड़कों को आदेश देता के वह मेरे लिए मजलिस और फैलाएं, स्वंय भी इस समय तक मेरे पास बैठा रहता यहाँ तक के मैं अपने घर वापस आया, मुझे नहीं पता के यह फरिश्ता है। एक दिन मैं ने इस से पूछा आप कौन हैं? तो इस ने उत्तर दिया। मैं फरिश्तों में से एक फरिश्ता हुँ, अल्लाह तआला ने मुझे इस लिए भेजा हा के मैं इस समय तक मदरसे में आप के सााथ रहा करूँ जब तक के आप वहाँ तशरीफ फरमा हैं।

(खलाइद उल जवाहिर, पः 134, 135)

बहजतुल असरार तथा खलाइदुल जवाहिर में लिखित हैः-

भाषांतरः हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं के बचपन में जब कभी मैं साथियों के साथ खेलने का उद्देश्य करता तो ग़ैब से किसी कहने वाले कि आवाज सुना करता “ऐ बरकत वाले, तुम मेरे पास आ जाओ, तो मैं तुरंत माता कि गोद में चला जाता।”

(बहजतुल असरार, पः 21, खलाइद उल जवाहिर, पः 9, अक़बार उल अक़यार, पः 51)

आप कि शान व प्रतिभा देखें! आप को बचपन ही से अल्लाह कि फिक्र व चिन्ता रही है।

संसार तथा इस की रंगीनियों (भौतिकतावादी) से आप कि सुरक्षा कि जा रही है के आप का स्तर संसार में व्यस्त होना नहीं, बल्कि सांसारिक लोगों से संसार कि चिन्ता को निकाल कर अल्लाह के ज़िक्र व फिक्र तथा इस कि याद में व्यस्त करना तथा इन के तारीक दिलं को अनवार व विकिरण से प्रकाश करना है।

धर्म के ज्ञान प्राप्त करने का लक्षण

हज़रत शेक़ मुहम्मद बिन खाइद अलवानी रहमतुल्लाहि अलैह वर्णन करते हैः-

भाषांतरः हज़रत शेक़ अबदुल खादर जीलानी ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हम से फरमाया के बचपन में मुझे एक बार हज्ज के दिनों में जंगल कि ओर जाने का संयोग हुआ एवं मैं एक गाय के पीछे-पीछे चल रहा था। अचानक उस गाय ने मेरी ओर देख कर कहाः ऐ अबदुल खादर! तुम्हें इस प्रकार के कार्य के लिए तो पैदा नहीं किया गया। मैं चिन्तित हो कर लौटा तथा अपने घर कि छत पर चढ़ गया तो मैं ने मैदान अ़रफात को देखा लोग वहाँ वुखूफ किए हुए हैं। यह सारी घटना मैं ने अपनी माता कि सेवा में उपस्थित हो कर निवेदन किया तथा आज्ञा कि कामना कीः ऐ माता! आप मुझे अल्लाह तआ़ला को दान करदें तथा मुझे बग़दाद कि यात्रा कि आज्ञा प्रदान करें ताकि मैं धर्म का ज्ञान प्राप्त करूँ सालेहीन (धर्मपरायण) कि ज़ियारत करता रहुं तथा इन कि संगत में रहुँ। प्रिय माता ने मुझ से इस का कारण पूछा? मैं ने सारी घटना कह दी तो आप कि मुबारक आँखों में आंसू आ गए। और मुझे बग़दाद जाने कि आज्ञा प्रदान कर दी, तथा यह उपदेश दिया के मैं हर स्थिति में सत्यवादी व सच्चाई का रास्ता अपनाऊँ।

(खलाइ़द उल जवाहिर, फी मनाखिब, अबदुल खादर- 8/9)

हज़रत पीराने पीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी माता कि सेवा में जो विनती की है इस में हमें कई उपदेश प्राप्त होते हैं। इस अल्पवयस्क कि स्थिति में आप को ज्ञान प्राप्त करने के लिए घर-बार छोड़ देना, आदरणीय माता तथा खरीबी बाई से दूरी प्रयोग करना, देशवासियों से दूर जाना, स्वंय धर्मनिष्ठा व धार्मिकता, दृढ़ता के विश्वास पर बग़दाद शरीफ कि यात्रा करना औऱ सब से महत्व यह बात है के ज्ञान प्राप्त के साथ-साथ बुज़ुर्गों व पूर्वजों नज़र बनाना, ऑलिया किराम तथा सालेही के निरीक्षण कि तडप तथा इन कि संगत को ध्यान रखना, यह सब ऐसे कार्य हैं जो हमारी चिन्ता व विचार को प्रोत्साहन तथा बुद्धि को अहसास व रोशनी देते हैं।

हमारे लिए प्रकाश का स्थान है के धर्म व संसार कि प्रगति व उन्नति केवल ज्ञान के प्राप्त करने के ज़ाहिरी पर निर्भर नहीं होता, बल्कि इस के साथ-साथ भले व धर्मनिष्ठ से नज़दीकी एवं बुज़ुर्गों (पूर्वजों) कि संगत मानवता के लिए अतिउत्तम हुआ करती है।

सरकार ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बग़दाद कि यात्रा के सिलसिले में ज्ञान प्राप्त के साथ-साथ धर्म के पूर्वजों को अपना प्रिय बनाया तथा यह सत्यवादी लोग कि अनुयायी ही से फितरत रही के वह सालेहीन से नज़दीकी तथा संगत को अधिमान दिया करते हैं।

परिश्रमें व प्रयास

सरकार पीराने पीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अनुदेश फरमाते हैं के जब नवयूवक के प्रारंभ में मुझ पर नीन्द प्रभावित आती तो मेरे कानों में यह आवाज़ आतीः ऐ अबदु खादर! हम ने तुझ को सोने के लिए पैदा नहीं किया।

(बहजतुल असरार, पः 21, सफीनह उल ऑलियाः पः 63)

अर्थात आप फरमाते हैं के मैं अरसे तक शहर के वीरान तथा जनशून्य स्थान पर जीवन बसर करता रहा, नफ्स को तरह-तरह कि निष्ठा तथा परिश्रम में ड़ाला, 23 वर्ष तर ईराक़ के बयाबान जंगलों में तन्हा फिरता रहा।

अर्थात एक वर्ष तक मैं साग-घांस आदि से गुज़ारा करता रहा एवं पानी नहीं पीता था, फिर एक वर्ष तक पानी भी पीता रहा, फिर 3 वर्ष मैं ने केवल पानी पर ही गुज़ारा किया, कुछ भी नहीं खाता, फिर एक वर्ष तक ना ही कुछ खाया, ना पिया तथा ना ही सोया।

(खलाइद उल जवाहिर, पः 10/11)

40 वर्ष ईशा के वुज़ू से फज्र कि नमाज़ समापन करना

अक़बार उल अक़्यार, पः 40, खलाइद उल जवाहिर, पः 76, में वर्णन हैः-

भाषांतरः हज़रत अबुल फतह हरवी रहमतुल्लाहि अलैह वर्णन करते हैं के मैं हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि पावन सेवा में 40 वर्ष तक रहा तथा इस मुद्दत के दौरान मैं ने आप को हमेशां ईशा के वुज़ू से सवेरे कि नमाज़ पढ़ते हुए देखा।

(अक़बारुल अक़यार, पः 40, खलाइ्द उल जवाहिर, पः 76)

हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 15 वर्ष रात भर में एक क़ुरान पाक समाप्त करते रहे।

(अक़बारुल अक़यार, पः 40 जामअ़ करामात ऑलिया)

इन परिश्रण तथा आत्मसंयम (आत्मदमन व संताप) का प्रकट स्वंय खूद आप ने इस प्रकार कियाः

हज़रत अबु अबदुल्लाह नज्जार रहमतुल्लाहि अलैह से मरवी है के हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आदेश फरमायाः मैं ने बडी-बडी कठिनाई तथा परिश्रम तथा संकटें सहन कीं यदि वह किसी पहाड़ पर गुज़रतें तो वह पहाड़ भी फट जाता।

(खलाइ्द उल जवाहिर, पः 10)

हज़रत ग़ौसे आज़म ऑलिया के मुखिया

हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब यह आदेश फरमायाः-

मेरा यह खदम अल्लाह के हर वली कि गरदन पर है।

ऑलिया किराम ने आप के आदेश तथा अपने अपने स्थान से हर वली ने इस आदेश को स्वीकार किया तथा सर तसलीम क़म किया। अर्थात हज़रत ख्वाजा मुअ़ईन उद्दीन चिश्ती ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने ऐसा अदब किया के इस आदेश के समय आप क़रासान कि परवतों के गुफाओं में परिश्रणमें व्यस्त थे।

आप ने हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि यह घोषणा सुनते ही अपना सर मुबारक धरती पर रख दिया तथा ज़बान हाल से निवेदन कियाः हुज़ूर वाला गरदन पर कया बल्कि मेरे सर पर आप का मुबारक खदम है।

(तफरीह उल क़ातिर)

ख्वाजा ख्वाजगां शाह नक्षबंदी हज़रत ख्वाजा बहा उद्दीन नक्षबंद रहमतुल्लाहि अलैह से हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वर्णन कथन के संबंध निवेदन किया गया तो आप ने आदेश फरमायाः गरदन ही नहीं आप का खदम मुबारक मेरी आँखों तथा दृष्ठि पर है।

(तफरीह उल क़ातिर)

ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि करामत

हज़रत शेकुल इसलाम आरिफ बिल्लाह इमाम मुहम्मद अनवारुल्लाह फारूखी प्रवर्तक जामिया निज़ामिया रहमतुल्लाहि अलैह ने मखासिदुल इसलाम, भागः 06, में एक विषय ग़ौसुस सक़लैन रहमतुल्लाहि अलैह कि सलतनत स्थापित फरमाया तथा हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि करामत इस प्रकार अनुवाद फरमाई। दाईरतुल मआरिफ बुतरुस बसतानी ने यह रिवायत व्याख्या की है के एक व्यक्ति ने हज़रत सैयदना अबदुल खादर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि सेवा में उपस्थित हो कर कहाः मेरी एक लड़की घर के छत पर चढी थी, वहाँ से वह ग़ायब हो गई। आप ने फरमाया के आज रात तुम इलाके कुरक़ी के वीराने में जाओ तथा पांचवीं टैले के पास बैठो तथा धरती पर यह कहते हुए एक दायरा अपने चारो-ओर खींच लो के (*बिसमिल्लाह अला नियह अबदुल खादर)* जब अंधेरा हो जाएगा

तो जिन्न के संघ अनेक सुरतों में तुम पर गुज़रेंगी, इन कि हैबतनाक व भयानक सुरतों को देख कर डरना नहीं। सवेरे के खरीब इन का राजा एक बडे सेना में आएगा तथा तुम से पूछेगा के तुम्हारी कया आवश्यकता है?

तो कह देना के मुझे अबदुल खादर ने भेजा है। एवं इस समय लड़की कि घटना भी वर्णन कर दो। इस व्यक्ति ने इस स्थान पर जा कर आदेश का समापन किया तथा पूर्ण घटना अभिनय में आए। जब राजा ने इस से पूछा तो इस ने कहा मुझे शेक़ अबदुल खादर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने भेजा है।

यह सुनते ही वह घोडे से उतर पड़ा तथा धरती को चूम के सीमा के बाहर बैठ गया तथा इस कि आवश्यकता निवेदन की, जब इस ने अपनी लडकी की घटना वर्णन की तो अपने साथियों से कहा के जिस ने यह कार्य किया है तुरंत इसे पकड के लाओ।

अर्थात एक सरकश जिन्न लाया गया, जिस के साथ मेरी लड़ी भी थी, आदेश दिया के इस सरकश कि गरदन मारदी जाए, तथा लडकी को मेरे हवाले कर के रवाना हो गया।

हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि यह करामत व्याख्या कर के हज़रत शेक़ुल इसलाम अलैहि रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

“इस से जिन्नों के ज्ञान की भी स्थिति मालूम होती है के दायरा तो कर्क़ में खींचा गया तथा फ़ासला बई़दह पर राजा को सूचना हो गई क्यों के रात भर चल कर खरीब सवेरे इश सीमा के पास पहुंचा जो केवल हज़रत शेक़ कि नियत से खींचा गया था।

तथा इस से हज़रत ग़ौसुस सखलैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नियन्त्रण की स्थिति भी मालूम हो गई के जिन्नों पर आप का कया प्रभाव था के लकीर जो आप की नियत से खींची''गई थी वहाँ राजा खुद उपस्थित हुआ तथा धरती चूमी।''

(मखासिदुल इसलाम, भागः 08, पः 169/170)

हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि इस करामत (चमतकार) से यह सच्चाई भी उजागर हो रही है के जिन्न तथा मानव हर दो आप कि उच्च जात से नाता रखते हैं। तथा आज्ञापालन करते हैं।

अल्लाह तआला से दुआ है के हमें हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फुयूज़ व बरकात से धनी फरमाए तथा आप के पदचाप व नक्षकदम पर चल कर संसार व परलोक कि सफलता व प्रगति प्रदान फरमाए।

आमीन।

अनवारे-क़िताबत-04

		देहान्त का वर्ष

क़ुरान करीम	अल्लाह सुभानाहु वा तआ़ला	
अहकामुल क़ुरान	इमाम अबु बक्र अहमद बन अ़ली राज़ी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह	370 हिज्री
तफसीरूल खुरतुबी	इमाम अबदुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद रहमतुल्लाहि अलैह	671 हिज्री
सहीह बुखारी	इमाम मुहम्मद बिन इसलाइल बुखारी रहमतुल्लाहि अलैह	256 हिज्री
सहीह मुसलिम	इमाम मुसलिम बिन हिजाज अबूल हसन खुरैशी रहमतुल्लाहि अलैह	261 हिज्री
जामे तिरमिज़ी	इमाम मुहम्मद बिन उवैसी तिरमिज़ी रहमतुल्लाहि अलैह	279 हिज्री
सुनन नसाई	इमाम अबु अबदुर्रहमान अहमद खज़वैनी रहमतुल्लाहि अलैह	303 हिज्री
सुनन इब्न माजह	इमाम अबु अबदुल्लाह मुहम्मद बिन यैज़ीद खुजवैनी रहमतुल्लाहि अलैह	273 हिज्री
सुनन अबु दाउद	इमाम सुलैमान बिन इशअ़त सजिस्तानी रहमतुल्लाहि अलैह	275 हिज्री
मोता अल इमाम मालिक	इमाम मालिक बिन अनस बिन मालिक रहमतुल्लाहि अलैह	179 हिज्री
मुसन्नफ अबदुर्रज़्ज़ाख	इमाम अबदुर रज़्ज़ाख बिन हिमाम सुनआ़नी रहमतुल्लाहि अलैह	211 हिज्री
मुसन्नफ इब्न अबि शैबह	इमाम अबु बक्र बिन मुहम्मद बन अबु शैबह कूफी रहमतुल्लाहि अलैह	235 हिज्री
मुसनद अल इमाम अहमद	इमाम अबु अबदुल्लाह अहमद बिन मुहम्मद बिन जंबल शैबानी रहमतुल्लाहि अलैह	241 हिज्री
शरह मआ़नी अल आसार	इमाम अबु जअ़फर अहमद बिन मुहम्मद अज़दी तहावी रहमतुल्लाहि अलैह	321 हिज्री

सहीह इब्न हिब्बान	इमाम अबु हातिम मुहम्मद बिन हिब्बान यतामी दारमी रहमतुल्लाहि अलैह	354 हिज्री
अल मअजम अल कबीर	इमाम सुलैमान बिन अहमद तबरानी रहमतुल्लाहि अलैह	360 हिज्री
अल सुनन अल कुबरा	इमाम अबु बक्र अहमद बिन हुसैन बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह	458 हिज्री
कंज़ुल उम्माल	इमाम अलाउद्दीन बिन हिसामुद्दीन मुतखी हिन्दी रहमतुल्लाहि अलैह	458 हिज्री
सुबुलुल हुदा वर्रशाद	इमाम मुहम्मद बिन यूसुफ सालिह शामी रहमतुल्लाहि अलैह	942 हिज्री
किताब उल क़िराज	इमाम अबु यूसुफ यअखुब बिन इब्राहीम अन्सारी रहमतुल्लाहि अलैह	182 हिज्री
कंज़ुद दखाइख	इमाम अबूलबरकात अबदुल्लाह बिन अहमद बिन महमूद निसफी रहमतुल्लाहि अलैह	710 हिज्री
अहकाम अहल उल ज़िम्मह	अल्लामा मुहम्मद बिन अबु बक्र इब्न जूज़िय	751 हिज्री
दुर्रुल मुखतार	अल्लामा मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन शामी रहमतुल्लाहि अलैह	1252 हिज्री
अल फतावा आलमगिरी	अल्लाह शैक़ निज़ामुद्दीन (व उलेमा हिन्द कि एक जमात) रहमतुल्लाहि अलैह	
फतावा अल बुलदान	इमाम अहमद बिन यहया बिन जाबिर बुलाज़दी रहमतुल्लाहि अलैह	279 हिज्री
अल बिदायह वन निहायह	शेक़ अबु अलफिदा अल्लामा इसमाइल बिन अम्र बिन कसरी रहमतुल्लाहि अलैह	774 हिज्री

परिचय अबुल हसनात इसलामिक रीसर्च सेन्टर

यह वैश्वीकरण (सार्वभौमिकता) का दौर है, आज विश्व एक छोटे गांव कि शिक्ल प्राप्त कर गया है। इंटरनेट (अन्तरराष्ट्रीय कम्प्यूटर तन्त्र) एक विशाल जाल के प्रकार सारे विश्व को घेरा हुआ है। पल भर में एक बात सारे विश्व में पहुंचाई जाती है।

विद्युन्यय साधन के माध्यम जिस प्रकार आम तथा साधारण होते जा रहे हैं इसी प्रकार समाज में अश्लीलता व निर्लज्जता फैलती जा रही है। इन साधन के ग़लत प्रयोग के कारण युवा पीढी विनाश हो रही है। इसलाम के विरोधी इन शक्तिशाली माध्यम व साधन के द्वारा इसलाम के चित्र को बिगाड कर पेश कर रहे हैं।

कभी इसलाम में के संस्कृति पर आक्रमण किए जा रहे हैं तो कभी से इसलाम कि शुद्धता को व्यर्थ किया जा रहा है। कहीं इसलाम के सिद्धांत पर आक्षेप किया जा रहा है तो कहीं क़ुरानी आयात (पद्य) का विरोध किया जा रहा हैं। ऐसे अस्थिरमति समय में इसलामी विश्वास के संरक्षण, इसलाम के सिद्धांत तथा अहकाम शरीअ़ कि पासदारी के लिए इसलाम के विश्वास का प्रदर्शन करने और भले कर्म व उच्च शिष्टाचार को आम करने लिए इस बात कि अत्यन्त आवश्यकता थी के इन्हीं माध्यम तथा वस्तुओं का प्रयोग कर के विश्व पर पर सत्य को स्पष्ट किया जाए तथा इसलाम कि सच्ची चित्र को जगत के सामने पेश किया जाए ताके मुसलिम समुदाय सत्य कि सरबुलंदी के लिए तैयार हो जाएं तथा असत्यता से हमेशां के लिए बेज़ार हो जाए।

इन्हीं लक्ष्य व उद्देश्य के प्रति अबुल हसनात इसलामिक रीसर्च सेन्टर 18 ज़िल हज्जा 1428 हिज्री 29 डिसम्बर, शनिवार के दिन मौलाना मुफती

सैयद ज़िया उद्दीन नक्षबंदी खादरी दामत बरकातुहुम शेक़ुल फिखह जामिया निज़ामिया ने स्थापित फरमाया, जिस का रजिस्ट्रेशन नम्बरः 501/2008 है।

सर्वश्रेष्ट प्रशंसा व गुणगान अल्लाह तआला के लिए! हज़रत अबुल क़ैर सैयद रहमतुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी रहमतुल्लाहि अलैह जो हज़रत हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह के उत्तराधिकारी हैं रीसर्च सेन्टर को अपने जीवन भर मार्गदर्शित फरमाते रहे। मुफक्किर इसलाम मौलाना मुफती क़लील अहमद दामत बरकातुबुम आलिया जामिया निज़ामिया उपकुलपति हैं इस के मुख्य सहायक है।

मंत्रणा- मण्डल मे शामिल हैं-
(1)- मौलाना डाकटर हाफिज़ शैख अहमद मोहिउद्दीन शरफी साहिब संचालक दारुल उ़लूम नोअ़मानिया तथा मुख्य सलाहकार।

(2)- मौलाना खाज़ी सैयद शाह अ़ाज़म अ़ली सूफी खादरी साहिब अध्यक्ष कुल हिन्दुस्तानुल मशाइक़।

(3)- मौलाना सैयद शाह महमुद पाशा खादरी साहिब, ज़रीन कुलाह, सज्जादह नशीन हज़रत सुलतान उल वाईज़ीन ज़रीन कुलाह (रहमतुल्लाहि अलैह)
(4)- मौलाना डाकटर हाफिज़ सैयद शाह बदिअउद्दीन साब्री साहिब अध्यक्ष (मण्डल विद्याभ्यास) उसमानिया यूनिवर्सिटी।

(5)- मौलाना डाकटर मुहम्मद मुसतफा शरीफ नक्षबंदी साहिब मुख्य विभाग- अ़रबिक विभाग, तथा निर्देशक दइ़रतुल माअ़रिफ अल उसमानिया।

(6)- आदरणीय ॶाली जनाब सैयद अहमद पाशा खादरी साहिब एम.एल.ऐ. चारमीनार चुनाव-क्षेत्र, प्रधान कार्यदर्शी, कूल हिन्द मजलिस इत्तेहादुल मुसलिमीन।

(7)- मौलाना ख्वाजा मुहम्मद बहाउद्दीन फारुख नक्षबंदी खादरी साहिब।

(8)- मौलाना शाह मुहम्मद फसीहउद्दीन निज़ामी साहिब अध्यक्ष पुस्तकालयाध्यक्ष, जामिया निज़ामिया

(9)- मौलाना सैयद शाह ऑलिया हुसैनी मुरतुज़ा पाशाह साहिब (पोते) शेक़ुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह।

(10)- मौलाना सैयद शाह इब्राहीम खादरी साहिब ज़रीन कुलाह सज्जादा नशीन, हज़रत खुबूल पाशह ज़रीन कुलाह।

(11)- मौलाना मुहम्मद हामिद हुसैन हस्सान फारुखी साहिब कामिल जामिया निज़ामिया, निरीक्षक, सुन्नी दावत इसलामी आंध्र प्रदेश।

(12)- मौलाना सैयद शाह नुर उल सूफी रुही पाशह साहिब मुख्य खाज़ी, सिकंद्राबाद।

(13)- मौलाना मुहम्मद सुलतान अहमद खादरी साहिब कामिल जामिया निज़ामिया।

(14)- मौलाना सैयद शाह फैज़उद्दीन खुरैशी खादरी साहिब सलीम पाशह सज्जादा नशीन, बारगाह जमालिया अम्बरपेट, हैद्राबाद।

(15)- ॶाली जनाब अलहाज मुहम्मद ज़हीरउद्दीन नक्षबंदी खादरी साहिब, मुतवल्ली, मसजिद अबुल हसनात जहानुमा हैद्राबाद।

(16)- ग़ाली जनाब अलहाज ख्वाजा मोअ़नउद्दीन इखबाल खादरी मुलतानी साहिब अध्यक्ष, मीलाद कमेटी हैद्राबाद तथा

(17)- आली जनाब मिरज़ा असलम बेग़ साहिब, शामिल हैं।

रीसर्च सेन्टर के प्रति इसलामी पुस्तकें प्रकाशन का प्रबंध तथा अन्य विषय पर सी डीज़ जिसकी आज आवश्यकता है उसका सिलसिला जारी है। विश्वास, जीवनी, धर्मशास्त्र समस्याएं, वर्तमान समस्याएं, शिष्टाचार, नीतिविद्या, साहित्यिक तथा सार्वजनिक भाषण पर पुस्तकें उर्दू व अँग्रेज़ी भाषा में उपलब्ध है, तेलुगू में भी पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं।

मुफती साहब क़िबला के व्याख्यान व भाषण (लेकचर्स) कि नइ सी डीज़ हर सप्ताह विमोचित होती हैं तथा सी डीज़ और डीवीडी (200) से अधिक उत्तेजक विषय पर सी डीज़ उपलब्ध हैं। मुफती साहब के साप्ताहिक लेकचर्स वैब साइट पर सीधा प्रसारण किए जा रहे हैं जो सारे विश्व के लिए लाभदायक व हितलाभ का माध्यम है।

सेन्टर कि ओर से 40 से अधिक स्थान पर निमन्त्रण व दावाह का काम जारी है, इन अधिवेशन में विषय एक विशिष्ट लेकचर के अतिरिक्त क़ुरान करीम का अभ्यास (शासन), सहीह बुखारी का अभ्यास तथा फिख्ह (धर्मशास्त्र) का अभ्यास से सैंकडो सदस्य वह कर रहे हैं।

आदरणीय हज़रत मुफती साहब के सेन्टर से प्रसिद्ध होने वाले विषय व पुस्तकें, निबन्ध, शासन व फतावा के वीडियो क्लिप्स से हैद्राबाद तथा अतराफ के मुसलमान खूब लाभ उठा कर रहे हैं। अधिक देश कि अन्य राज्य से भी पुस्तकें तथा वीडियो सीडीज़ कि मांग दिन बदिन बढती जा रही है। इस के अतिरिक्त, लाखों कि संख्या वह है जो इन्टरनेट पर आनलाइन हैं वह लाभ उठा रही हैं।

फेसबुक, यूटियुब तथा गुगल वीडियो तथा अन्य वैबसाइट पर समय के अनुसार से उत्तेजिक विषय तथा पुस्तकों के सात भी अपलोड किए जाते हैं। जिन से देश व प्रदेश कि जनता ग़ैर मामुली संख्या में प्रकोप करते हैं तथा अपने सुझाव व विचार का प्रकट करते हैं।

सेन्टर कि ओर से हर वर्ष गर्मी के मौसम कि शिक्षा के अवसर पर अल्पावधि (अल्पकालीन) कोर्स का प्रबंध रह करता है। स्पोकन (मौखिक) अ़रबिक क्लास का भी प्रबंध है। जिस में दैनिक आधार के प्रति धार्मिक छात्र के अलावा स्कूल व कॉलेज के छात्र तथा कर्मचारी व व्यापारिक पेशे के लोग शिक्षा प्राप्त करते हैं।

मुफती साहब ने वर्तमान काल के आवश्यकता के पेश नज़र रीसर्च सेन्टर ने इसलामी वैबसाइट [Www.Ziaislamic.com](http://www.Ziaislamic.com) उर्दू तथा अंग्रेज़ी भाषा में आरम्भ कि है जो नीचे वर्णन महत्व कार्य पर स्थापित हैः-

---

-

- उच्च अनुसंधान, फतवे जो क़ुरान करीम, हदीस के अनुसार, अखाइ़द (विश्वास), इ़बादात (आराधना), मामलात (व्यवहार), सामाजिक जीवन तथा शिष्टाचार व सभ्याचार के आधार पर स्थापित है।
- अहले बैत व सहाबा के जीवनी, विश्वास तथा शिक्षण।
- धार्मिक (सदाचारी) मानव के जीवनी, विश्वास तथा शिक्षण।
- मानसिक (बुद्धि-विषयक), शोधन, विश्वास से संबंधित उच्च अनुसंधान पुस्तकें।
- इसलामी सिद्धांत पर विचारधारा निबन्ध।
- वर्तमान व उत्तेजिक सुविज्ञ व सुशिक्षित निबन्ध।
- आधुनिक व वैज्ञानिक सम्सया तथा उस पर शरीअ़त का निर्णय।
- मनमोहक व आकर्षक करने वाले श्रव्य व वीडियो भाषण।

एक विशेष संभाग "मुहद्दिस देक्कन" के नाम से पेज है जिस में हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह कि रचना व शिक्षण उपलब्ध शामिल है।

एक और संभाग *गुलिस्तान हज़रत शेकुल इसलाम* के नाम से पेज है जिस में हज़रत शेकुल इसलाम, निर्माता जामिया निज़ामिया रहमतुल्लाहि अलैह कि रचना तथा विवरण उपलब्ध हैं।

रमज़ान मास के अवसर पर एक विशेषत पेज रमज़ान इस्पेशल के नाम से प्रसिद्ध किया जाता है जो रमज़ान कि उत्तमता व विशेषता (उत्कृष्टता व प्रतिष्ठा) से संबंधित अहादीस शरीफ, रोज़े के मसाइल, तावीह के मसाइल, ऐअ़तेकाफ के मसाइल, शबे खद्र के विशेषता व मसाइल व अहकाम और दुअ़ाएं ईद कि नमाज़ के मसाइल व अहकाम तथा सदक़े फित्र के अहकाम पर निर्धारित होता है।

हज के अवसर पर हज व उ़मरह तथा ज़ियारत के मसाइल व अहकाम, उत्तमता व शिष्टाचार, फतावा व विषय पर स्थापित एक विशेषत पेज "हज स्पेशल" आरम्भ किया जाता है।

महिलाओं के लिए मसाइल व अहकाम से अनुभव सुशिक्षित होने तथा इन को धार्मिक ज्ञान के दृष्टिकोण से एक संभाग "वुमेन्स सेकशन" नाम से स्थापित किया गया। अल्लाह तअ़ाला के कर्म से रीसर्च सेन्टर प्रति के प्रबंध नीचे वर्णन विभाग कार्यरत हैं।

- अनुसंधान का विभाग
- विकास व शिक्षण का विभाग
- इसलामी धर्मशास्त्र का विभाग
- भाषांतर का विभाग

- दावह का विभाग
- प्रकाशित व मुद्रांकन का विभाग

अल्लाह तआला कि कृपा है इस वैबसाइट से उपमहाद्वीप के अतिरिक्त से प्रस्तुत धारा अतिरिक्त सऊदी अरब, U.A.E. कतर, उमान, ईरान, अमरिका, ऑस्ट्रेलिया, स्पेन, ब्राज़ील, थाइलैंड, न्यूज़ीलैंड, आयरलैंड, नेधेरलैंड, कनाडा, कुवैत, इटली, बगंलादेश, U.K., उरपह, जापान, स्वीडन, मलेशिया, मॉरिशस, रुस, सीरिया, कोलम्बिया, स्लोवाकिया, डेनमार्क, नार्वे, ग्रीस, इज़राइल, टर्की, मौजम बैकय, बेल्जियम, सन मराइन, हंगरी और दुनिया के अनेक देशों से रोजाना हजारो व्यक्ति दर्शन कर रहें है।

महाराष्ट्र राज्य के नगर पुना में दिस्म्बर, 22, 2011, को जामा मसजिद केमपे में होने वाले सम्मेलन में विषयः *भारत में इसलाम का पदार्पण, उनके व्यवस्थित व सुकारक प्रसारण* में आदरण मुफती साहब के भाषण के बाद, मसजिद के खतीब, मौलाना हाफिज़ मुहम्मद अयुबी अशरफी आगे बढकर अबुल हसनात इसलामिक रीसर्च सेन्टर के ब्रांच (शाखा-कार्यालय) के प्रस्ताव को पेश किया तथा पुना में ब्रांच प्रमाणित किया गया और मसजिद के खतीब को मुखिया तथा मौलाना हाफिज़ मुहम्मद अयुबी अशरफी के उपराष्ट्रपति घोषित किया गया। अबुल हसनात इसलामिक रीसर्च सेन्टर के क्रियाशीलता (सक्रियता) के प्रसार के लिए क्षेत्रीय शाख स्थापित किए जा रहे हैः- निज़ामाबाद, बोधन, करीमनगर, आदिलाबाद, यमगनुर, कुरनूल, अधूनी, गुनतकल, विजैयवाडा, होसपेट तथा अन्य स्थान पर जनता कि आग्रह व मांग पर स्थापित होंगे।

अल्लाह तआ़ाला रीसर्च सेन्टर कि इन कार्यकलाप में दिन दुगनी रात चौगनी सफलतता व उन्नति दान फरमाए तथा अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम के सदखे व तुफैल इन सेवा को स्वीकार फरमाएं।